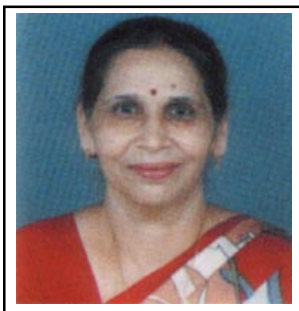


## DIRECTOR'S NOTE



A warm welcome to the Annals of the National Tuberculosis Institute (NTI). This publication provides valuable information about NTI from its inception till date i.e., 1959-1999. Therefore, it is relevant to provide a context, which could not be incorporated in the volume. The primary purpose of establishing the NTI was to formulate a nationally applicable programme for tuberculosis (TB) control and training of district TB key personnel and orientation training for officers and other

TB workers. Subsequent important ones were monitoring the National TB Programme (NTP) and assisting the development of infrastructure in the states. The most critical function is strengthening the State Tuberculosis Centres (STCs) to carry out their assigned functions. Thus, NTI has focused on the NTP and refrained from doing any independent research.

The history of any institution can never be written in isolation. It encompasses the events, time, places, organisations and the people involved. In **Annals of NTI** the battle against TB during last few centuries around the world, comes to life. The readers can relive the bygone era and those associated with the governments, organisations and institutions mentioned in the Annals can start to feel a part of it. There are many states, organisations and individuals who have helped NTI in several ways as mentioned in the text. However, it will be relevant to mention the names of a few equal partners of NTI in the formulation of the programme. These are the Government of Karnataka, in particular the Lady Willingdon State TB Centre (LWSTC), Bangalore, World Health Organisation (WHO) and United Nations International Children's Emergency Fund (UNICEF). The WHO officers and staff posted in NTI from 1959 to 1977 worked as a part of NTI team in developing a revolutionary approach to TB control. As stated by Dr Mahler (one of the WHO officers), they worked with the dedication of true grass-root-workers. They withstood criticism from the WHO headquarters Geneva as well as South East Asia Regional Office (SEARO), New Delhi for not always following the mandate determined by the WHO.

The observations in the memorabilia are personal; individual freedom has been respected, hence each one's opinions have been expressed without reservations. This does not purport to be the official stand of the NTI or the Director. It must

also be noted that while establishing the Institute, a majority of the staff were handpicked and they sometimes worked in capacities different from those for which they were recruited. This was necessary because at that time people with appropriate qualifications were not available, nor had job descriptions been formulated. Some of them may have suffered monetary stringencies since progression could not be assured. Hence, a certain amount of frustration crept in. This was unfortunate but subsequently, suitable administrative actions were taken. The names of the officers and some staff have been mentioned in different chapters as and when they held responsibility. However, there may be some who might have not found a place in the Annals in spite of working in NTI. The omission is not deliberate.

There have been indications, that NTI should diversify or enlarge its area of research. Some officers of the NTI believed that research restricted entirely to TB after implementing the programme was far too limiting. It is my view, that NTI should continue to focus on research in the field of TB specifically. Whenever necessary, it should engage in collaborative research with other organisations for studies with a broader purview. The theme **Small is beautiful** aptly applies to NTI, which has the strength of about 200 staff members. However, it does not mean that NTI should not update itself. There should be constant upgradation with regard to infrastructure, facilities and staffing. The Bacteriology, Library and the Statistics Sections should be modernised with sophisticated equipments. Given the pandemic of AIDS, the Bacteriology Section is a valuable asset for NTI and its collaborating organisations carrying out experimental research on Mycobacterium tuberculosis (M.tb) and Human Immuno Deficiency virus (HIV).

This book is a tribute to the people who have been and are currently involved either directly or indirectly in this venture. Further, the Annals may prove to be a valuable source of inspiration, in the future, to researchers, programme implementers and policy makers. Sincere attempts have been made to ensure that reading of the annals is enjoyable. Hence, the narrations are like stories being rendered.

Bangalore  
Dated : April 2000

***Dr (Mrs) Prabha Jagota***

## दो शब्द

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के इतिवृत्त के पाठकों का हार्दिक स्वागत है। यह प्रकाशन राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के संदर्भ में प्रारम्भ (१९५९) से लेकर अब तक (१९९९) की महत्वपूर्ण उल्लेखनीय घटनाओं व सूचनाओं को उपलब्ध कराता है। इसलिए यहाँ पर इस प्रकाशन से संबन्धित एक प्रसंग देना आवश्यक है, जिसे हम इस संकलन में नहीं दे सकते थे। राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य राष्ट्रीय स्तर पर एक क्षयरोग नियंत्रण योजना उपलब्ध करवाना था तथा साथ ही संबन्धित अधिकारियों व क्षयरोग कर्मचारियों को प्रशिक्षण प्रदान करना था। अन्य मुख्य कार्य राष्ट्रीय क्षयरोग कार्यक्रम (एन.टी.पी.) को मोनिटर करना तथा विभिन्न राज्यों की मूलभूत संरचना के विकास में सहायता करना था। संस्थान का एक और अत्यधिक समीक्षात्मक कार्य था, प्रादेशिक क्षयरोग केन्द्रों (एस.टी.सी.) को समर्थता प्रदान करना ताकि वह निर्धारित किये गये कार्यों को सम्पन्न कर सकें। चूँकि राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान का मुख्य केन्द्र बिन्दु राष्ट्रीय क्षयरोग कार्यक्रम रहा है अतः संस्थान ने इस कार्यक्रम से सम्बन्धित शोध कार्यों को प्राथमिकता दी है।

किसी भी संस्थान के इतिहास को केवल परिपेक्ष में नहीं लिखा जा सकता है। वह किसी न किसी तरह से समकालीन घटनाओं, समय, जगहों, संस्थाओं तथा विभिन्न लोगों से जुड़ा होता है व उन सबका मिला जुला ब्योरा होता है। इस इतिवृत्त में क्षयरोग के विरुद्ध कुछ शताब्दियों से विश्व में लड़ा जा रहा युद्ध सजीव हो उठता है। इसमें उन विभिन्न राज्यों, संगठनों तथा कायकर्त्ताओं का भी उल्लेख किया गया है जिन्होंने राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान को उसके कार्यों में कई तरह से महत्वपूर्ण योगदान अथवा सहायता प्रदान की है। यहाँ पर कुछ ऐसे ही सहयोगी संस्थानों के नाम, जिन्होंने राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान के साथ मिलकर कई कार्यक्रमों में मुख्य भूमिका निभाई है, उनका उल्लेख करना आवश्यक है। यह सहयोगी हैं - कर्नाटक राज्य सरकार; लेडी वैलिंगटन राज्य क्षयरोग केन्द्र (एल०डब्लु०एस०टी०सी०), बेंगलूर; विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा यूनीसेफ। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कुछ अधिकारी व कर्मचारी जो सन् १९५९ से लेकर सन् १९७७ तक राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान में कार्यरत थे, ने संस्थान के साथ मिलकर क्रांतिकारी क्षयरोग नियंत्रण प्रणाली विकसित की थी। उनमें से एक अधिकारी डा. माहलर का कहना है कि हम सबने एक सच्चे माली की तरह अपना कार्य किया है। हम सब से जुड़े विश्व स्वास्थ्य संगठन सब अधिकारियों को उनके द्वारा निर्धारित मापदंड के अनुसार कार्य न करने पर, विश्व स्वास्थ्य संगठन मुख्यालय; जिनेवा तथा क्षेत्रीय कार्यालय, सी.आर.ओ.; नई दिल्ली से कई आलोचनाओं का भी सामना करना पड़ा। डा.माहलर बाद में इसी संगठन के के महानिदेशक बने।

संस्मरण लेखों में दिये गये विचार पूर्ण रूप से व्यक्तिगत हैं, प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता का

आदर किया गया है अर्थात् सभी के विचारों को बिना किसी संकोच के व्यक्त करने दिया गया है। इसका यह आशय नहीं है कि यह सरकारी तौर से राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान अथवा इसके निदेशक के विचार हैं। यहाँ पर यह भी कहना आवश्यक होगा कि राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान की स्थापना के समय योग्य कर्मचारियों को बड़ी सावधानीपूर्वक चुना गया था तथा कभी - कभी उन्हें अपनी योग्यताओं जिसके लिए उन्हें नियुक्त किया गया था, से भी हटकर कार्य करना पड़ता था। यह बहुत आवश्यक था क्योंकि उस समय उचित योग्यताओं वाले कर्मचारियों का अभाव था। और उनके विभिन्न पदों के अनुसार कार्यों का विवरण भी नहीं दिया गया था। उनमें से कुछ कर्मचारी तरक्की की अनिश्चितता व धन-अल्पता से भी ग्रसित रहे होंगे। इसलिए यह स्वाभाविक है कि वे थोड़ा सा उत्तेजित अथवा चिन्तित रहे होंगे। यह अभाग्यपूर्ण था, लेकिन बाद में उचित प्रशासनिक कदम उठाये गये। इस संकलन में कुछ अधिकारियों व कर्मचारियों के नाम विभिन्न अध्यायों में जगह - जगह पर दिये गये हैं कि कैसे उन्होंने अपने उत्तरदायित्वों को निभाया। यद्यपि कुछ अधिकारियों के नाम इसमें नहीं आ सके हैं। लेकिन ऐसा जान बूझकर नहीं किया गया है।

राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान से सम्बन्धित कुछ अधिकारियों का मानना है कि राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान को अपने शोध कार्यक्षेत्र में सतत विस्तार करना चाहिये था। उनका मत है कि शोधकार्य पूर्णतः क्षयरोग तक ही सीमित था इसलिए विभिन्न योजनाओं को लागू करना भी सीमित था। लेकिन मेरा दृष्टिकोण यह है कि राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान को क्षयरोग के क्षेत्र में ही शोध कार्य जारी रखना चाहिये। जब कभी आवश्यकता पड़े तो राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान द्वारा उन सम्बन्धित संस्थाओं के साथ मिलकर बृहत क्षेत्र में भी बिना विस्तार के शोधकार्य किया जा सकता है। यह वाक्य "लघुतम् सदैव सुन्दरम्" राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान पर यथायोग लागू होता है, यहाँ लगभग दो सौ कर्मचारी कार्यरत हैं। इसका यह आशय नहीं है कि राष्ट्रीय क्षय रोग संस्थान को अपना नवीनकरण नहीं करना चाहिये। इसे अपने विभागों, कर्मचारियों तथा मूलभूत संरचना में निरन्तर विकास करना चाहिये। बैक्टीरियोलॉजी विभाग, पुस्तकालय तथा सांख्यिकीय विभागों को नये यंत्रों से सुसज्जित कर आधुनिकरण होना चाहिये जैसे विश्वव्यापी रोग एड्स को ध्यान में रखकर बैक्टीरियोलॉजी विभाग, राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान व अन्य संस्थाओं के लिए एम.टी.बी. तथा एच.आई.वी. पर शोधकार्य करने हेतु अत्यन्त उपयोगी है।

यह पुस्तक उन सभी लोगों को एक श्रद्धान्जलि है जो राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए थे, या आज भी जुड़े हुए हैं। आने वाले समय में यह इतिवृत्त खोजकर्ताओं, योजना निदेशकों तथा नीति निर्माताओं के लिए प्रेरणा का एक महत्वपूर्ण श्रोत हो ऐसी हमारी कामना है। इस इतिवृत्त को पाठकों के लिए रुचिकर बनाने हेतु प्रत्येक अध्याय को एक कहानी की तरह लिखा गया है।

बेंगलूर

दिनांक : अप्रैल २०००

डा. (श्रीमती) प्रभा जगोता

निदेशक